نومبر ۲۰۰۵ء

ماہنامہ

# شعاعِ عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبارَکَ وَ تَعالٰی

قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَ کِتَابٌ مُبِیْنٌ

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب


NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

مؤسسۂ نور ہدایت حسینیۂ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳



R.N.I. No. UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07


Monthly

# SHUA-E-AMAL

Lucknow

# शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

लखनऊ

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone : 2252230

वर्ष–2

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 5

माह नवम्बर 2005 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

# शुआ-ए-अमल

## ''लखनऊ''



वार्षिक – 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपरइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया।

## फ़ेहरिस्ते मज़ामीन



### अक़्वाले इमामे रिज़ा अ0

- जब लोग नये–नये गुनाहों का इरतेकाब शुरु कर देंगे तो ख़ुदावन्देआलम उन्हें नयी–नयी बलाओं में मुबतला कर देगा।
- जो किसी हाजतमन्द की हाजतरवाइ करे, ख़ुदावन्देआलम उसकी दुनिया व आख़ेरत दोनों आसान कर देगा।

## आठवें इमाम

# हज़रत इमाम अली रिज़ा अ0

**आयतुल्लाह सैय्यद मुहम्मद हुसैन तबातबाई**
**मुतरजिम : जनाब असर नक़वी साहब जायसी**

हज़रत इमाम रिज़ा (अली इब्ने मूसा) अलैहिस्सलाम सातवें इमाम के साहेबज़ादे थे और एक मशहूर रिवायत के मुताबिक़ 148 हिजरी मुताबिक़ 765 ई0 में पैदा हुए। आपका इंतिक़ाल 203 हि0 मुताबिक़ 817 ई0 में हुआ।

(उसूले काफ़ी जिल्द–1 पेज–486)

अपने बुज़ुर्गवार बाप के बाद आप हुक्मे खुदावन्दी और अपने पेश रवों के फ़ैसले के मुताबिक़ मसनदे इमामत पर बैठे। आपका दौरे इमामत ख़लीफ़–ए–हारून रशीद और फिर उसके दो बेटों अमीन और मामून के अहदे ख़िलाफ़त पर घिरा हुआ था। अपने बाप के इंतिक़ाल के बाद मामून अपने भाई अमीन से जंग में पड़ गया जिसका ख़ातमा कई ख़ून भरी जंगों और आख़िर में अमीन के क़त्ल पर हुआ। जिसके बाद मामून तख़्ते ख़िलाफ़त पर बैठा। (उसूले काफ़ी जिल्द–1 पेज–488)

इस ज़माने तक शीओं के लिए ख़ुलफ़ाए बनी अब्बास की जंगी पालीसी सख़्त से सख़्त हो गयी थी, क्योंकि अली (अ0) के हिमायती (अलवी) हर लम्हे यहाँ–वहाँ बग़ावत करते रहते थे जो ख़ून भरी जंगों की शक्ल में सामने आती थीं और इस तरह वह ख़िलाफ़त के लिए एक मुशकिल खड़ी कर देते थे जिससे निपटना ख़ुलफ़ा के लिए दुश्वार हो जाता। शीओं के इमाम उन लोगों के साथ किसी क़िस्म की मदद नहीं करते जो इस क़िस्म की बग़ावतें खड़ी करते और न उनके मामलात में कोई दख़ल देते। उस वक़्त क़ाबिले लिहाज़ तादाद में शीओं ने इमामों को अपना मज़हबी पेश्वा मान रखा था जिनकी इताअत वह फ़र्ज़ समझते थे और जिन्हें वह पैग़म्बरे इस्लाम (स0) का हक़ीक़ी ख़लीफ़ा समझते थे। वह ख़िलाफ़त को अइम्मा की ताहिर व अतहर ज़िम्मेदारी के मुक़ाबले में नीचा समझते थे और उसे रोमनों और ईरानी हुक्मरानों की हुकूमत जैसा तसव्वुर करते थे जो इस्लामी क़वानीन को नाफ़िज़ करने के बजाए माद्दा परस्त लोगों के एक गिरोह के ज़रिये चलायी जाती थी। ऐसी सूरते हाल का जारी रहना ख़िलाफ़त के लिए एक ख़तरनाक बात थी और इसके लिए एक चैलेन्ज की हैसियत रखती थी। मामून उन मुश्किलात का हल ढूँढ निकालने में लग गया जिसे ख़ुलफ़ाए बनी अब्बास की सत्तर साला पॉलिसी हल करने से क़ासिर रही थी। इस मसले को ख़त्म करने के लिए उसने अपने जानशीन की हैसियत से आठवें इमाम का इंतिख़ाब किया ताकि इस तरह दो मुश्किलात पर क़ाबू पाया जा सके। अव्वल तो यह कि वह आले रसूल (स0) को हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत करने से रोके जो बाद में ख़ुद हुकूमत में मिल जाएँगे। दूसरे यह कि लोगों का

रूहानी एतक़ाद और इमाम से उनकी अन्दरूनी वाबस्तगी ख़त्म हो जाएगी। इस तरह से मामून को दुनियावी मामलात और खुद ख़िलाफ़त की सियासत में उलझा लिया जाएगा जिसे शीआ हमेशा एक लानत और ग़ैर हक़ीक़ी चीज़ समझते रहे हैं। इस तरह उनकी मज़हबी तन्ज़ीम बिखर जायगी और फ़िर उनसे ख़िलाफ़त के लिए कोई ख़तरा न रह जायेगा। इन उमूर को अन्जाम देने के बाद फ़िर इमाम को हटा देना अब्बासियों के लिए कोई दिक़्क़त की बात न होगी।

(दलाएलुल इमामह पेज–197)

इस फ़ैसले को अमली जामा पहनाने के लिए मामून ने इमाम को मदीने से मर्व बुलाया जहाँ आप एक बार तशरीफ़ ले जा चुके थे। मामून ने पहले आप को ख़िलाफ़त और फिर ख़लीफ़ा की जानशीनी की पेशकश की। इमाम ने अपनी माज़ूरी ज़ाहिर की और तजवीज़ को ठुकरा दिया। लेकिन बाद में आप इस शर्त पर जानशीनी क़ुबूल करने पर राज़ी हो गये कि वह हुकूमत के उमूर कोई मुदाख़लत नहीं करेंगे और न सरकारी एजेण्टों की तक़र्रुरी और तनज़्ज़ुली से उनका कोई सरोकार होगा। (उसूले काफ़ी जिल्द–1 पेज–489)

यह वाक़ेआ 200 हिजरी मुताबिक़ 814 ई0 में पेश आया, लेकिन फौरन ही मामून ने यह समझ लिया कि ऐसा करके उसने सख़्त ग़लती की है क्योंकि शीईयत बड़ी तेज़ी के साथ फैल रही थी। इमाम से लोगों की वाबस्तगी में इज़ाफ़ा हो रहा था और अवाम, फ़ौज और सरकारी एजेण्टों की इमाम से वालिहाना अक़ीदत हैरतअंगेज़ तौर पर बढ़ रही थी। मामून ने इस मुश्किल पर क़ाबू पाने का इलाज ढूँढा और आपको ज़हर देकर शहीद कर दिया। इमाम के इंतिक़ाल के बाद आपको ईरान के शहरे तूस में दफ़न किया गया जिसे अब मशहद कहा जाता है।

उलूमे ज़हनी पर मौजूद तसानीफ़ को अरबी ज़बान में मुन्तक़िल करने में मामून ने दिलचस्पी ली। उसने बहुत सी ऐसी नश्स्तिों का एहतेमाम किया जिसमें मुख़तलिफ़ मज़ाहिब और फ़िरकों से ताल्लुक़ रखने वाले दानिश्वर जमा होते थे और आलिमाना व दानिश्वराना मुबाहसों में हिस्सा लेते थे। आठवें इमाम ने भी इन मुबाहसों में हिस्सा लिया था और दूसरे मज़ाहिब के दानिश्वरों से बहस की थी। ऐसे बहुत से मुबाहसों को शीओं की अहादीस में महफ़ूज़ कर लिया गया है।

(मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब जिल्द–4 पेज–351)

□□□

## अक़्वाले इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम

- ☐ ख़ानदान वालों से राबता हमेशा ताज़ा रखो अगरचे सिर्फ सलाम ही हो।
- ☐ कभी अपने दीनी भाई से जिदाल या (हद से ज़ियादा) मिज़ाह न करो और उनसे झूठे वादे मत करो।
- ☐ माँ–बाप को मुहब्बत भरी निगाहों से देखना इबादत है।
- ☐ माँ–बाप को नाराज़ करने से उम्र कम हो जाती है।

# नेक सुलूक

**इमादुल उलमा अल्लामा सैय्यद मुहम्मद रज़ी मुजतहिद**

हुस्ने सुलूक और नेक बर्ताव की इस्लाम ने तरह–तरह से तालीम दी है। सूर–ए–निसा में अल्लाह ने फ़रमाया है जिसका तर्जुमा यह है :–

अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न बनाओं। माँ–बाप के साथ अच्छा बर्ताव करो और रिश्तेदारों और यतीमों से, मोहताजों से और क़राबतदार पड़ोसी से, पड़ोसी से, अजनबी पड़ोसी से, पास रहने वाले से, मुसाफ़िरों से और जो कोई तुम्हारे क़ब्ज़े में हो और तुम उसके मालिक हो उससे भी ग़र्ज़ इन सबसे नेक बर्ताव और अच्छा सुलूक करो। बेशक अल्लाह किसी ग़ुरूर और फ़ख्र करने वाले को पसन्द नहीं करता। (सूर–ए–निसा आयत–36)

यहाँ अल्लाह ने अपनी इबादत का हुक्म देने के बाद सबसे पहले वालदैन से अच्छा बर्ताव करने का हुक्म दिया है। इससे माँ–बाप के मर्तबे की अहम्मियत ज़ाहिर होती है और ज़ाहिर है कि हम उन ही की वजह से पैदा हुए, उन ही ने दुख झेलकर हमारी परवरिश की और हमारी वजह से कितनी रातें जाग कर और कितने दिन मुसीबत झेलकर गुज़ार दिये फिर हम पर उन का हक़ अल्लाह की इबादत के बाद सबसे ज़ियादा क्यों न हो। इसीलिये अल्लाह ने इसको इस क़दर अहम्मियत देकर बयान फ़रमाया है।

एक बार का ज़िक्र है हुज़ूरे अनवर (स0) ने फ़रमाया :

बड़ा बदनसीब है! बड़ा बदनसीब है! सहाबा किराम (रजि0) ने अर्ज़ की : हुज़ूर! कौन बड़ा बदनसीब है? फ़रमायाः

''वह आदमी जिसके माँ–बाप मौजूद हो और फिर भी वह उनकी ख़िदमत करके जन्नत हासिल न करे।''

अल्लाह की इबादत और माँ–बाप की इताअत के हुक्म के बाद इस आयत में जिसका तर्जुमा अभी मैंने बयान किया रिश्तेदारों की साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म है फिर यतीमों और हाजतमन्दों की मदद करने और उनके साथ नेकी का बर्ताव करने का फ़रमान है।

हुज़ूर (स0) ने एक हदीस में फ़रमाया है कि : ''जो शख़्स यतीमों और बेवाओं और मोहताजों की ख़िदमत में लगा रहता है उसको वही दर्जा मिलेगा, जो ख़ुदा की राह में जिहाद करने वालों का होता है।''

आयत में इसके बाद इसका हुक्म है कि अपने पड़ोसी जो रिश्तेदार न हों या रिश्तेदार पड़ोसी सब पर एहसान किया करो और उसके साथ भी अच्छा सुलूक किया करो।

हुज़ूर (स0) ने फ़रमाया है कि :

''अल्लाह की क़सम वह आदमी मोमिन नहीं है जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से महफ़ूज़ न हो।'' फिर वह पड़ोसी चाहे हमारा रिश्तेदार न हो बल्कि हम मज़हब यानी मुसलमान भी न हो

**.......................(बक़िया पेज–14 पर)**

''वमिन कुल्लि शैइन ख़लक़ना ज़ौजैनि लअल्लकुम तज़क्करून''

(अज़्ज़ारियात आयत–49)

# काएनात में 'शादी' करने का दस्तूर

(पिछले शुमारे से आगे)

हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

## निकाह में मुश्किलें न खड़ी करें

सेक्स एक फूल की तरह ख़िलता है। जब यह खिल जाता है तो उस वक़्त शादी की ज़रूरत आप ही आप (प्रकृतिक रूप से) पैदा हो जाती है। इन्सान की ज़िन्दगी की इस ज़रूरत से कोई इन्कार नहीं कर सकता। शुरु में लड़के–लड़कियों में आने वाले वक़्त और ज़िन्दगी के बारे में कुछ उम्मीदें और कामनाएँ पैदा होती हैं। इस तरह पहले से ही शादी की चाह पैदा होती है। यह एक ऐसी सच्चाई है जो हर आदमी ख़ास कर जवान लड़के–लड़कियों के माँ–बाप के लिए साफ़ और रौशन दिन की तरह बिलकुल खुली हुई होती है।

गुनाह से बचने और समाज को बुराइयों से बचाने का सबसे अच्छा, मज़बूत और ऊँचा रास्ता यही है कि ठीक समय पर लड़के–लड़कियों की शादी करा दी जाए। इससे इन्कार तो कोई जाहिल बेवकूफ़ मर्द या नासमझ औरत ही कर सकती है।

इस तरह सबसे पहले माँ–बाप और वह लोग जो शादी ब्याह के मुद्दों जुड़े हुए हों उन सबके लिए ज़रूरी है कि वे ख़ुदा चाहे इस मामले यानी शादी में आसानियाँ पैदा करें और शादी का सीधा–सादा आसान तरीक़ा जुटाएँ। फिर वे लड़के–लड़कियाँ जो शादी करना चाहते हैं अपने होने वाले दुल्हा या दुल्हन से बेकार की उम्मीदें न बाँधें और शादी की कठोर शर्तें न रखें ताकि स्वभाव, सेक्स और ख़्वाहिशें आसानी से पूरी हो जाएँ। इस तरह एक सफल ज़िन्दगी की बुनियाद खड़ी हो जाए और दुनिया व आख़िरत का कल्याण और भलाई मिल जाए।

बेशक जो लोग अपने लड़के–लड़कियों के मसले में ख़ासकर शादी ब्याह के सिलसिलें में आसानियाँ पैदा कर देते हैं उनके लिए ख़ुदा दुनिया और आख़िरत ख़ासकर क़यामत में हिसाब और मीज़ान (आमाल का तराजू/कर्मतुला) को आसान कर देगा, जैसा कि क़ुर्आन व रिवायतों से पता चलता है। इसी तरह बुरे मिज़ाज के सख़्त और बात–बात में फ़ी निकालने वाले वे औरत–मर्द जिनकी वजह से लड़के–लड़कियाँ सेक्स की चक्की में पिसकर मान्सिक (Mental) मरीज़ हो जाते हैं और पाक चाल–चलन वाले गुनाहों में पड़ जाते हैं और उनकी आशाएँ और आरज़ुएँ तबाह हो जाती हैं, क़यामत में उन औरतों–मर्दों का हिसाब किताब सख़्त होगा और उन पर ख़ुदा का ग़ज़ब (प्रकोप) होगा और वे उसके अज़ाब की आग में जलेंगे।

शादी–ब्याह के मामले में ज़्यादा छान–बीन करने वाले लोग अन्जाने में कठोर हो जाते हैं जबकि स्वभाव और नेचर से यह काम आसानी से हो जाता है। अगर ज़िन्दगी में शादी का मसला कठिन होता तो यह बेहतरीन सिस्टम इस सूरत में न दिखायी देता जिसमें आज नज़र आता है।

माँ–बाप और लड़के लड़कियों को चाहिए कि इस ख़ुदाई व इन्सानी प्लान से जुड़ी हुई चीज़ों, मेहर, तय करना, मंगनी, सगाई की धूमधाम, निकाह की टीपटाप मफ़फ़िल, दिखावा, जगमगाहट,

रस्मोरवाज को लेकर सख़्ती से काम न लें और ऐसे प्रोग्रामों से बचें जो दोनों ख़ानदानों की सकत और हैसियत से बाहर हों ताकि शादी आसानी से हो जाये और खुदा तुम्हारे दुनिया व आख़िरत के मसलों को आसान कर दे।

तक़वा वालों (संयमियों) का तरीक़ा अपनाएँ और भलाई, बरकत, शुभ मंगल के इस सोते से फ़ायदा उठायें। अल्लाह वालों के तरीक़े से ज़िन्दगी बितायें क्योंकि दुनिया व आख़िरत की कामयाबी, सौभाग्य, नेकी, ऊँचाई, अच्छाई और इज़्ज़त को अनन्त–अनादि सौन्दर्य के इन्हीं चाहने वालों के रंग में रंग जाने से वजूद मिलता है।

हज़रत अली (अ0) तक़वे वालों की पहचान इस तरह कराते हैं :– ''उनका वजूद गन्दगी से बचा हुआ और पाक है, उनकी ज़रूरतें कम हैं, उनसे हर नेकी, अच्छाई की आस की जाती है और उनकी बुराइयों से (सबकी) बचत है। जिन लोगों का शादी–ब्याह में हाथ होता है उन्हें चाहिए कि उम्मीदें, सकत से ज़्यादा शर्तें लगाने, लालच के ग़ुलाम होने, ग़लत रीति–रवाज पर चलने, ज़िद्दम–ज़िद्दा करने और निकाह की सभी बातों में सख़्ती करने से बचें, शादी के मसले शुरु से ही तक़वे (संयम) की बुनियाद पर तय किये जायें और ख़ुदा की ख़ुशी पाने के लिए भलाई, समझदारी, सलाह, सहूलत और नर्मी अपनायें। शादी के बाद मर्द पर वाजिब है कि जिस लड़की को उसने इस लेहाज़ से देखा, पसन्द किया और उससे निकाह किया है तो उसके साथ ज़िन्दगी बिताये और उस ख़ुदाई रहमत (दया) व मुवद्दत (सच्चा प्यार) का ज़मानतदार और रखवाला बना रहे, जो उन दोनों के बीच हो गयी है। इसी तरह लड़की के लिए ज़रूरी है कि अपने दुल्हा के साथ निबाह करे और हर तरह उसके हक़ और अधिकारों को पूरा करे जिसको उसने मज़हब व शरीयत के लिहाज़ से अपना पति मान लिया है।

यह बात साफ़ हो जाना चाहिए कि ज़्यादा धूमधाम, मेहमानों की बहुतात, तर्क से ख़ाली नासमझी की रस्मों को पालना और शर्तों की भरमार से अधिकारों (Rights) की रखवाली नहीं हो पाती बल्कि यह रखवाली वर चुनने, आसान व सादा प्रोग्राम, इस्लामी आचरण के रख–रखाव और पति–पत्नी के सभी ख़ुदाई व इन्सानी हक़ अधिकारों को पूरा करने से होती है। शादी के बन्धन को बाक़ी रखने के लिए मर्द औरत के एक दूसरे से चाह–प्यार, दोस्ती, मुहब्बत दिखाने से और ज़िन्दगी को जंजाल और परेशानी से बचाये रखने से और उन बातों के बचने से होती है जो मनोवैज्ञानिक (Pscychological) बीमारियों का कारण बनती हैं।

हज़रत अमीरुलमोमिनीन (अ0) और जनाबे फ़तिमा ज़हरा (स0) जैसे मियाँ–बीवी की ज़िन्दगी हर मुसलमान मर्द औरत के लिए बहुत बढ़िया सबक़ है। फ़तिमा (स0) अपने घर वालों ख़ासकर अपने पति के लिए आराम चैन की वजह और घर में आराम के सामान जुटाने वाली हैं और अली (अ0) वर बनने का बड़े ऊँचे नमूना हैं, साथ में बच्चों के लिए चाहने वाले मेहरबान, बड़े अच्छे पालने वाले और घर के कामों में बीवी के बेहतरीन साथ देने वाले हैं। आप आम घरेलू कामों जैसे सफ़ाई, आटा गूँधने, बच्चों की देख–रेख में मदद करते थे। घरेलू कामों में बीवी को मुश्किल में नहीं देख सकते थे और न यह चाहते थे कि घरेलू ज़िन्दगी के सभी काम फ़ातिमा (स0) के ही ज़िम्मे रहें।

एक–दूसरे के हक़ अधिकारों का पास–लिहाज़ करना औरत मर्द दोनों पर वाजिब है। ज़िन्दगी के सभी कामों में एक–दूसरे के साथी बने रहें। और हाँ ज़ुल्म ज़्यादती में साथ न दें। हर वह बेजा काम ज़ुल्म (अन्याय) है जिससे दूसरे का दिल दुखे। ख़ुदा ज़ुल्म–ज़्यादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता है, और किसी पर ज़ुल्म–ज़्यादती को चाहे वह कम ही क्यों न हो पसन्दी करता है।**(जारी)**

# इस्लाम में बीवी और शौहर के हुकूक़

आख़री क़िस्त

हुज्जतुल इस्लाम मोलाना मो0 सुहफी साहब
अनुवादक सै0 सुफ़यान अहमद नदवी

मग़रिब के फ़लसफ़ियों के नज़रियात की एक झलक देखिये :

समुईल इस्माईल्ज़ कहता है : ''अगरचे मर्द की सिफ़ात और इम्तियाज़ात का ताल्लुक़ उसकी सोंच विचार से है और औरत के सिफ़ात और खुसुसियात का ताल्लुक़ उसके दिल से है लेकिन ज़रूरी है कि मर्द अपने दिल की तरबियत अपनी सोच बिचार की मानिन्द करे और औरत पर भी वाजिब है कि अपनी फ़िक्र की तरबियत अपने दिल की तरह करे। बदनियत और फ़ासिद दिल का मालिक मर्द एक जाहिल और मामूली औरत की तरफ़ एक मुहज़्ज़ब समाज में बे अहम्मियत होता है। जो औरत और मर्द सेहतमन्द और पाकीज़ा अख़लाक़ के मालिक बनना चाहें उन्हें चाहिए कि अपने तमाम फ़िक्री और अख़लाक़ी पहलुओं की तरबियत और परवरिश की कोशिश करें क्योंकि अगर मर्द शफ़क़त और दूसरों की हालत का एहसास करने से ख़ाली है तो वह एक हक़ीर, बे फ़ायदा और खुदगर्ज़ हस्ती है और औरत चाहे कितनी ही ख़ूबसूरत हो अगर वह अक़्ल व होश न रखती हो तो वह एक ऐसी गुड़िया की तरह है जिसे लिबास पहना दिया गया हो। इसमें कोई शुब्हा नहीं कि औरत की खुसूसियात उसके दूसरों से मिलने–जुलने के मौक़े पर उसके जज़्बात और मुहब्बत के ज़रिये ज़ाहिर होती हैं।

औरत एक नर्स है जिसे बनी नौ इन्सान की परवरिश पर मुक़र्रर किया गया है और यही वजह है कि वह कमज़ोर और नातवाँ बच्चों की देखभाल करती और फ़ितरी रुजहान की बिना पर उन्हें मेहर व मुहब्बत की आग़ोश में पालती है। औरत घर की हिफ़ाज़त करने वाला फ़रिश्ता है और अपने हुस्ने सीरत और नेक किरदार की बदौलत ख़ानदान के लिए ऐसा आराम व आसानियाँ पैदा करती है जो अख़लाक़ और नेक ख़सलतों को क़ुव्वत बख़्शती है और उनकी परवरिश करती है। औरत फ़ितरतन और अपनी तबअी बनावट की वजह से शरीफ, मेहरबान, हौसलामन्द और ईसार पसन्द होती है और उसकी पुरमुहब्बत आँखों से उम्मीद और एतमाद का नूर झलकता है। यह नूर जहाँ कहीं चमके बेकसों को उम्मीद बख़्शता है और ग़मज़दा और मुसीबत के मारे लोगों को तसल्ली देता है।

समाज के हमेशा पाक व पाकीज़ा रहने के लिए ज़रूरी है कि मर्द और औरत की तरबियत के बीच बराबरी क़ायम रहे क्योंकि औरत की तहारत और पाकदामनी और मर्द की तहारत और तक़वा एक दूसरे के लिए लाज़िम व मलज़ूम है और दोनों पर अख़लाक़ी क़ानूनों का बराबर–बराबर इतलाक़ होता है इसलिए समाज अख़लाक़ी ऐबों से पाक रहना चाहे तो ज़रूरी है कि उसकी औरतें और मर्द परहेज़गार और अख़लाक़ी फ़ज़ीलत के हामिल हों और जो अमल ज़मीर और अख़लाक़ की तालीमात के ख़िलाफ़ हो, दोनों उससे परहेज़ करें और उसे ऐसा हलाक करने वाला ज़हर समझें जो एक बार बदन में दख़िल होकर फिर बाहर नहीं निकलेगा और उसके बुरे असरात आने वाली ज़िन्दगी की सआदत और ख़ुशबख़्ती को बरबाद कर देंगे।

मर्द के खुशगवार और आरामदेह ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए ज़रूरी है कि वह अपनी बीवी से रूहानी यकजहती रखता हो लेकिन औरत के लिए यह हरगिज़ मुनासिब नहीं है कि वह मर्द की ही बदली हुई शक्ल हो और हर बात में उसकी तक़लीद करे क्योंकि जिस तरह औरत यह नहीं चाहती कि उसके शौहर के अख़लाक़ और तरीक़े औरतों जैसे हों उसी तरह मर्द भी यह बात पसन्द नहीं करता कि उसकी बीवी की आदतें मर्दों जैसी हों।

औरत के फ़ज़ाएल और ख़ूबियाँ उसकी अक़्ल व फ़िक्र में नहीं बल्कि दिल और जज़्बात में हैं और मर्द उसकी अक़ल और मालूमात से नहीं बल्कि उसकी मेहरबानी और शफ़क़त से फ़ायदा उठाता है और लज़्ज़त हासिल करता है।

एलयोज़ विण्डल हिल्मज़ कहता हैः "हम अक़्ली और फ़िक्री कुव्वतें रखने वाली औरत के मुक़ाबले में उस औरत की जानिब ज़ियादा मायल होते हैं जो मेहरबानी वाले जज़्बात की मालिक हो।

मर्द कभी–कभी अपने आपसे इस क़द्र बेज़ार हो जाते हैं कि वह उन तमाम सिफ़ात और ख़ुसूसियात की तारीफ़ करते हैं जो ख़ुद उनसे मुख़तलिफ़ हों।"

वह यह भी कहता हैः "अगर कोई शख़्स मुझसे अल्लाह तआला के लुत्फ़ व करम की दलील माँगे तो मैं उसका जवाब दूँगा कि अल्लाह की रहमत और इनायत की दलील हमारे हक़ में वह अजीब इख़तेलाफ़ है जो मर्द और औरत के मिज़ाज की उफतावद में पैदा किया गया है ताकि उसके ज़रिये उनका एक दूसरे से मिलजुलकर रहना मुमकिन हो सके।"

हेनरी तबीलोर कहता है : "एक अच्छी औरत को ऐसी सिफ़ात और आदतों का मालिक होना चाहिए कि वह घर को मर्द के लिए राहत और आराम की जगह बना दे और यह मक़सद हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि औरत में इतनी क़ाबलियत हो कि मर्द को घर का इंतिज़ाम चलाने की ज़हमत से फ़ारिग़ कर दे और ख़ास तौर से उसे क़र्ज़े के ख़तरे से महफ़ूज़ रखे। और औरत को चाहिए कि मर्द के सामने पसन्दीदा शक्ल में आए क्योंकि मर्द की पसन्द उसकी बातिनी तबीअत से पूरी तरह जुड़ी रहती है और इसके बिना कोई मुहब्बत भी पैदा नहीं हो सकती। एक ऐसी ज़िन्दगी में जिसके साथ तकलीफ़ें और दर्द भी जुड़े हुए हैं, अगर घर प्यार और मुहब्बत का मक़ाम न हो तो वह यक़ीनन आराम व राहत की जगह भी नहीं हो सकता। क्योंकि फ़िक्र व रूह की आराम सिर्फ मेहर व मुहब्बत के दामन में ही मुमकिन है।

मर्द अपनी बीवी से दिलरुबाई व बनाव सिंगार से ज़ियादा अक़्ल व होश, ख़ुश ख़ुर्रम तबीअत और रौशन ख़याली की उम्मीद रखता है और तल्ख़ व तेज़ इश्क़, जज़्बातीपन और सरकश एहसासात के मुक़ाबले में उसकी दिली मेहरबानी की तरफ़ ज़ियादा माएल होता है।

आरामदेह ज़िन्दगी बसर करने वाले लोगों का दस्तूरे ज़िन्दगी "सब्र और शकेबाई" होता है। यह ज़िन्दगी हुकूमत की तरह अपनी एक ख़ास सियासत रखती है और शादी शुदा शख़्स को "कुछ लो कुछ दो" के उसूल पर अमल करना पड़ता है। उसको बात माननी भी पड़ती है और मना भी करना पड़ता है। उसे सब्र और हौसले से काम लेना पड़ता है। इन्सान के लिए यह लाज़िम नहीं कि दूसरों के एहसासात के मामले में अन्धा बन जाए और उन्हें न देखे। इसके उलट ज़रूरी है कि वह माफ़ करने और आँख बचाने की ताक़त रखता हो और जो कुछ देखे उसे नर्मी और मेहरबानी से बर्दाश्त करे।

शदीशुदा ज़िन्दगी में तमाम सिफ़ात और आदात में से मियाना रवी सबसे ज़ियादा मुफ़ीद, ज़रूरी और देर तक रहने वाली होती है और अगर यह पसन्दीदा ख़सलत खुद्दारी से जुड़ी हो तो इन्सान को हौसले और नर्मी का आदी बना देती है और वह इस बात का आदी हो जाता है कि सख़्तियों और ख़िलाफ़े मिज़ाज बातों के मुक़ाबले में हौसले से काम ले और अगर कोई सख़्त अलफ़ाज़ सुने तो जवाब न दे और चुपचाप बैठा रहे यहाँ तक कि दूसरे फ़रीक़ का गुस्सा ठण्डा पड़ जाए।

यह जो कहा गया है कि नर्म जवाब गुस्से के शोले को बुझा देता है, इसका इतलाक़ सबसे ज़ियादा शादीशुदा ज़िन्दगी पर होता है।

अंग्रेज़ी की मशहूर कहावत है कि ''लड़कियाँ जाल बनाने में महारत रखती हैं लेकिन उनकी बेहतरी इसमें है कि पिंजरा बनाने का तरीक़ा सीखें''

मर्दों को आमतौर से परिन्दों की तरह जाल में आसानी से फंसाया जा सकता है लेकिन परिन्दों ही की तरह उनकी देखभाल भी बेहद मुश्किल और परेशानी वाली है। अगर औरत अपने घर को यूँ न संवार सके कि वह मर्द के लिए सबसे ज़ियादा सजी हुई और ख़ुशहाल जगह साबित हो और मर्द दिनभर की मेहनत के बाद खुश–खुश वहाँ जाने पर आमादा हो तो उस बदनसीब मर्द की हालत पर आँसू बहाने चाहियें और हक़ीक़त में उसे एक बेघर शख़्स समझना चाहिए। कोई अक़्लमन्द शख़्स सिर्फ औरत के हुस्न व जमाल की ख़ातिर उससे रिश्त–ए–इज़दिवाज क़ायम नहीं करता। यह ठीक है कि शुरु–शुरु में औरत की ख़ूबसूरती मर्द को उस पर लुभाने में बड़ा असरदार ज़रिया होती है लेकिन बाद में उसकी ज़िन्दगी में कोई ख़ास असर डालने वाली नहीं होती है। बेशक हमारा यह मक़सद नहीं कि ख़ूबसूरती की बुराई करें या उसकी क़द्र व क़ीमत को घटाने की कोशिश करें क्योंकि चेहरे और जिस्म की ख़ूबसूरती आम तौर से सेहतमन्द मिज़ाज की अलामत होती है। अस्ल में जो बात हम कहना चाहते हैं वह यह है कि एक ऐसी हसीन व जमील औरत से शादी करना जो अख़लाक़ी और रूहानी ख़ूबियों से ख़ाली हो, एक बहुत बड़ी ग़लती है जिसकी तलाफ़ी हरगिज़ मुमकिन नहीं।

दिखावटी ख़ूबसूरती एक न एक दिन मुरझा जाती है और उसकी कोई क़द्र व क़ीमत नहीं रहती। इसके उलट मानवी हुस्न और ख़ूबी हर सूरत में हमेशा शादाब और दिलकश रहती और जैसे–जैसे वक़्त गुज़रता है उसकी रोनक़ और दिलफ़रेबी घटने के बजाए बढ़ती रहती है। शादी हुए जब एक साल गुज़र जाता है तो मर्द और औरत में से कोई भी एक–दूसरे के हुस्ने सूरत के बारे में नहीं सोंचता बल्कि इसके उलट दोनों एक दूसरे के अख़लाक़ और तौर तरीक़ों पर ध्यान देते है।''

दोतो कोपल कहता है : ''मर्द को अपनी ज़िन्दगी में एक नेक सीरत और बाअख़लाक़ बीवी से बढकर कोई सहारा नहीं मिल सकता। मैंने अपनी ज़िन्दगी में ऐसे कमज़ोर और मजबूर लोग भी देखे हैं जिन्होंने साथ मिलकर बड़े अज़ीम कारनामे अन्जाम दिये हैं और इसकी वजह भी यही थी कि उनकी बीवियाँ लाएक़ और बाअख़लाक़ थीं जिन्होंने बीवी की ज़िम्मेदारियाँ अन्जाम देते वक़्त अपने शौहरों की रूहानी मदद की और उन्हें ग़लतियों से महफ़ूज़ रखा।''

जो कुछ अब तक बयान किया गया वह बीवी और शौहर के हुक़ूक़ के बारे में इस्लामी तालीमात का एक नमूना था। अब बहस के ख़ातमे पर हम बीवियों और शौहरों के कुछ हुक़ूक़

की फ़ेहरिस्त देते हैं और उनकी तफ़सील और एक दूसरे के हुक़ूक़ का ज़िक्र मुफ़स्सल किताबों पर छोड़ देते हैं :

- शौहर पर वाजिब है कि अपनी बीवी को जाने पहचाने मेयार के मुताबिक़ ख़र्च मुहैय्या करे। उन ख़र्चों में लिबास, खाना, घर का साज़ो सामान, ख़िदमतगार और दूसरी तमाम ज़रूरियाते ज़िन्दगी शामिल हैं जो औरत को उसकी हैसियत के मुताबिक़ दी जानी चाहियें।
- ज़रूरियाते ज़िन्दगी मुहैय्या करने में बीवी को तकलीफ़ और परेशानी में न डाले और आराम व आसानी के रास्ते उसे फ़राहम करे।
- बीवी की इज़्ज़त व एहतेराम करे और उसे दुख न दे।
- बीवी को ऐसे काम करने को न कहे जो उसके लिए मुनासिब और उसकी शान के मुताबिक़ न हों जैसे तिजारत, खेती वग़ैरा बल्कि घर के काम जैसे कपड़े धोने, खाना पकाने और बच्चों को साफ़ सुथरा रखने की ज़िम्मेदारी भी उस पर न डाले लेकिन औरत के लिए मुस्तहब है कि घर के काम और शौहर व औलाद से मुताल्लिक़ ख़िदमत अन्जाम दे।
- बीवी की ग़लतियों और कोताहियों को नज़रअन्दाज़ करे और उसे माफ़ कर दे और उसकी बद अख़लाक़ियों पर (अगर वह कभी–कभी बद अख़लाक़ी का से पेश आए) सब्र से काम ले और बिला वजह उसकी तरफ से बदगुमानी का इज़हार न करे।
- अपने जिस्म और लिबास की पाकी का ख़याल रखे।
- बात चीत के दौरान अच्छी बातें करे और सवालात के अच्छे जवाब दे।
- बीवी को अच्छाइयों का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके।
- अगर बीवी, बेटी को जन्म दे तो उसके साथ बद अख़लाक़ी से पेश न आए और तक़दीरे इलाही को उससे न जोड़े।
- उससे किनारा कशी न करे।
- बीवी पर वाजिब है कि शौहर से बद अख़लाक़ी न करे और गुस्से, कड़वेपन और बदज़बानी से उसे दुख न दे।
- बीवी के लिए मुस्तहब है कि काम–काज में शौहर की मदद करे और ख़ास कर घर के मामले और खाना तैयार करने वग़ैरा की ज़िम्मेदारियाँ संभाल ले।
- शौहर को अज़ीज़ रखे और उसकी इज़्ज़त व एहतेराम में कमी न करे।
- शौहर के सिवा किसी और के लिए बनाव सिंगार न करे।
- शौहर की इजाज़त के बिना उसका माल सदक़े और सिला रहमी के तौर पर भी न ख़र्च करे।
- शौहर की मौजूदगी और ग़ैर मौजूदगी में उसकी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करे।

औरत और मर्द के इन उसूल पर कारबन्द होने से उनकी ज़िन्दगी ख़ुशहाल हो जाती है और उनके घर की ख़ुशबख़्ती में कोई रुकावट नहीं पड़ती।

तजुर्बे से यह साबित हो गया कि तक़रीबन तमाम की तमाम जुदाइयों और ख़ानदान की परेशानियों की वजह यह होती है कि औरत और मर्द अपनी ज़िम्मेदारियों को नहीं समझते या उनको अन्जाम देने से जी चुराते हैं।

बाईमान औरतें और मर्द जो अपने आप को अहकामे ख़ुदावन्दी अन्जाम देने के क़ाबिल समझते हैं वह उन पर बिना किसी सवाल व जवाब के अमल करते हैं और नतीजे के तौर पर दुनिया और आख़रत की ख़ुशी से फ़ायदा उठाते हैं। □□□

# इमाम रिज़ा अ0 की सीरते तैय्यबा

**मोहतरमा तनज़ीम ज़हरा नक़वी**

मोअतबर रिवायात मसलन रौज़तुल वाएज़ीन, बहारुल अनवार, कश्फुल गुम्मह वग़ैरा के मुताबिक़ 11 ज़ी क़अदह 148 हि0 को इमामत का आठवाँ क़मर नमुदार हुआ यानी इसी बाबरकत तारीख़ में जनाबे नजमा ख़ातून और हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ0) के गुलशने आग़ोश में बहार आ गयी, सरज़मीने मदीना बल्कि पूरी दुनिया इस चमक वाले सूरज से रोशन हो गयी।

पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की पेशीनगोई के मुताबिक़ आपका नाम आपके वालिद माजिद ने ''अली'' मुन्तख़ब किया जो नाम मौलाए काएनात हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ0) के नाम पर था। आप का वजूदे मुबारक जो मज़हरुल अजाएब का मज़हर था आपकी कुन्नियत अबुलहसन है और आपके अलक़ाब ग़ैज़ुल मुलहिदीन, कुर्रतु ऐनिल मोमिनीन वग़ैरा हैं लेकिन आप का मशहूर तरीन लक़ब ''रिज़ा'' है, और आपको अली रिज़ा कहा जाता है।

शैख़ सदूक़ की मोअतबर रिवायत में है कि जनाबे नजमा ख़ातून फ़रमाती हैं कि मैंने इस फ़रज़न्दे बुज़ुर्गवार के ज़मान–ए–हमल में हर्गिज़ किसी क़िस्म की संगीनी महसूस नहीं की मैं मुस्तक़िल ख़्वाब में अपने शिकम में तस्बीह व तहलील की आवाज़ सुना करती थी विलादत के बाद मेरे फ़र्ज़न्द ने आसमान की तरफ़ रुख़ बुलन्द करके ज़ेरे लब कुछ फ़िक़रात कहे जिसे मैं न समझ सकी। इमाम मूसा काज़िम (अ0) से दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : ''ऐ नजमा! तुम्हें मुबारक हो मेरा यह फ़र्ज़न्द मेरे बाद ज़मीन पर अल्लाह की हुज्जत है।''

आपकी विलादत से तक़रीबन 15 दिन क़ब्ल आपके जद्दे बुज़ुर्गवार इमामे जाफ़र सादिक़ (अ0) ने शहादत पायी। आपकी आरज़ू यह थी कि आपकी ज़ियारत कर लें मुकर्रर फ़रमाया करते थेः ''ऐ मूसा काज़िम (अ0)! आलिमे आले मुहम्मद तुम्हारी सुल्ब से है काश मैं उसे पा लेता यही वह फ़र्ज़न्द है जिसका नाम अमीरुलमोमिनीन (अ0) के नाम पर है।''

अहलेबैते अतहार यक़ीनन ख़ुदावन्दे आलम की तरफ से इल्म के आला दरजात पर फ़ाएज़ थे यह और बात है कि किसी को इल्मी फ़ुयूज़ फैलाने का मौक़ा कम मिला किसी को ज़ियादा। इमामे जाफ़र सादिक़ (अ0) के बाद सबसे ज़ियादा दीने मुहम्मदी की नशर व इशाअत का मौक़ा इमामे रिज़ा (अ0) को ही मिला है।

सबसे ज़ियादा आप ही दोनों हज़रात ने तबलीग़ी अनासिर को फ़रोग़ बख़्शा, ख़ास तौर से आशूर–ए–हुसैनी को ज़िन्दा रखना आप हज़रात की तबलीग़ का मुहिम तरीन उन्सुर था। फ़र्शे अज़ा बिछाते थे, लोगों को जमा करते थे शायर या ख़तीब से ज़िक्रे मसाएब का मुतालबा फ़रमाते थे।

आग़ाज़े मुहर्रम के साथ ही सोगवारी का सिलसिला शुरु हो जाता था इमामे रिज़ा (अ0) अपने असहाब से फ़रमाते थे कि अगर किसी बात पर भी रोना न आए तो मेरे जद्दे बुज़ुर्गवार पर

आँसू बहाओ। इन तमाम अलफ़ाज़ से उम्मते इस्लामिया को इन हालात की तरफ मुतवज्जह फ़रमाया करते थे जिनके पेशे नज़र यह अज़ीम वाक़ेआ पेश आया था और जिस वाक़ेआ ने इस्लाम को बक़ा की ज़मानत फ़राहम की है।

इमामत के मन्सब पर फ़ाएज़ होने से पहले इमामे मूसा काज़िम (अ0) अपने तमाम फ़र्ज़न्दों से फ़रमाया करते थे : ''तुम्हारे भाई अली रिज़ा आलिमे आले मुहम्मद हैं। अपने दीनी मसाएल इन से हल किया करो।''

अबुसल्लत का कहना है कि मैंने आप से अज़ीम आलिमे दीन नहीं देखा बेशुमार गिरोह आते थे और आपसे फ़िक़्ह व अक़ाएद वग़ैरा के बारे में बहस व मुबाहेसा किया करते थे और हज़रत हमेशा सभी को क़ाबिले इतमिनान जवाब के साथ वापस करते थे। रौज़–ए–रसूल में आप तशरीफ़ ले जाते थे उलमा व फ़ुक़हा अपनी मुश्किलात का हल दरयाफ़्त कर लिया करते थे।

इब्राहीम बिन अब्बास से रिवायत है कि : ''मैंने हरगिज़ इमामे रिज़ा (अ0) को नहीं देखा कि आपसे किसी ने कुछ पूछा हो और आपने जवाब न दिया हो कोई भी उनसे ज़ियादा साहेबे इल्म न था मामून जो इम्तिहान के लिए सवाल करता था और आप हर जवाब इस्तेदलाल के साथ दे दिया करते थे तीन दिनों में एक क़ुर्आन ख़त्म करते थे और फ़रमाते थे यह तीन दिन इसलिए हैं क्योंकि मैं हर आयत पर दक़ीक़ फ़िक्र करता हूँ और जितना फ़िक्र करता हूँ उलूम के ज़ख़ीरे सामने आते रहते हैं।

सियासी उमूर में भी आपकी जद्दोजहद रौशन पहलू रखती है इमाम (अ0) को इस्लाम की तबलीग़ और नश्र व इशाअत का निसबतन काफ़ी मौक़ा मिल गया।

वह समाज जिसमें देबल ख़ज़ाई जैसी शख़सियत परवरिश पा रही हो या इस तरह के दूसरे अफ़राद मौजूद हों इसकी सक़ाफ़त समाज में ख़ानदाने पैग़म्बर से मवद्दत एक खुली हुई बात है।

हज़रत की वली अहदी के दौरान अवाम के जोश व जज़बात, अहलेबैत (अ0) की अक़ीदत के सिलसिले में बड़ी ऊँची सतह पर पहुँच चुके थे, लेकिन चूँकि दोनों भाई अमीन व मामून में ज़बरदस्त इख़्तेलाफ़ था लिहाज़ा इमामे रिज़ा (अ0) को अपने मिशन को आगे बढ़ाने का अज़ीम मौक़ा फ़राहम होता रहा और यह सिलसिला वली अहदी के साथ अपनी इन्तेहा को पहुँच गया।

ग़र्ज़ यह कि तर्ज़े हयात बेनज़ीर व बे मिसाल है, हर पहलू नमूना व आइडियल है आपके अख़लाक़े हसना के बारे में मिलता है कि आप कभी किसी से सख़्त कलामी नहीं करते थे और न किसी की बात को काटते थे, हर शख़्स की हाजत रवाई आपका फ़र्ज़ था किसी की तरफ पाए मुबारक नहीं फैलाते थे, किसी के सामने टेक लगाकर नहीं बैठते थे, ग़ुलामों के साथ सख़्ती से गुफ़्तगू नहीं फरमाते थे, क़हक़हा नहीं लगाते थे। दस्तरख़्वान पर अपने तमाम नौकरों को भी बिठाया करते थे, रातों को कम सोते थे और अकसर रातों में बेदारी फरमाते थे, हर महीने में पहली और आख़री जुमेरात को और दरमियानी बुध को रोज़ा रखते थे, रात की तरीकी में सदक़ात व ख़ैरात अता फ़रमाया करते थे। अन्दर हमेशा मामूली लिबास पहनते थे लेकिन बाहर ज़रूरत के एतबार से अच्छा लिबास ज़ेबे तन फ़रमा लिया करते थे।

सिजद–ए–परवरदिगार आपका शिआर

था। अपने शीओं को मुतनब्बे फ़रमाया करते थे कि तमाम आमाल हर शाम, वक़्त के इमाम के सामने पेश किये जाते हैं और वह तुम्हारे हक़ में इस्तेग़फ़ार करते हैं लिहाज़ा तुम अपने गुनाहों से उनका दिल मत दुखाओ और ऐसे बन जाओ जैसे शीओं को होना चाहिए।

सख़ावत की सूरते हाल यह है कि आप ख़ुरासान में थे अरफा के दिन अपना तमाम माल राहे ख़ुदा में दे दिया।

बेमिस्ल व नज़ीर फ़ज़ाएल व कमालात के हामिल इमामे मुबीन (अ0) को लोगों ने मर्ज़े हसद व बुग़ज़ की बिना पर दुनिया में रखना मुनासिब न समझा और शैतानी हरबों से हमेशा यही कोशिश रही कि अहलेबैत (अ0) का नाम व निशान मिटा दिया जाये, लेकिन ख़ुदा अपनी हुज्जत को बाक़ी रखने वाला है।

इमामे रिज़ा (अ0) ने फ़रमाया : ''ख़ुदा की क़सम हम अहलेबैत वह हैं जो दुनिया से नहीं जाएँगे मगर यह कि क़त्ल किये जाएँ या शहीद होंगे।'' साएल ने पूछा : ''ऐ इब्ने रसूलुल्लाह! आपको शहीद कौन करेगा?''

फ़रमाया : ''ज़मीन पर रहने वाला बदतरीन शख़्स और हमें अइज़्ज़ा व अक़ारिब से दूर ग़रीबुल वतनी में दफ़न करेगा जो शख़्स ग़ुरबत के आलम में हमारी ज़ियारत करेगा उसका सवाब अल्लाह की बारगाह में सौ हज़ार शोहदा, सिद्दीक़ीन और हज व अमरा नीज़ जिहाद का होगा। रोज़े क़यामत वह हमारे साथ महशूर होगा और हमारे साथ बेहश्त में आला दरजात पर होगा।''

इमामे सादिक़ (अ0) ने फ़रमाया कि हज़रत रसूले ख़ुदा (स0) फ़रमाते हैं : ''हमारा एक पार–ए–तन ख़ुरासान की सरज़मीन में दफ़न होगा जिस मोमिन ने उनकी ज़ियारत की उस पर बेहश्त वाजिब होगी और आतिशे जहन्नम उस पर हराम होगी।''

□□□

## (बक़िया................नेक सुलूक)

और काफ़िर व मुशरिक ही क्यों न हो जबकि हमारे अल्लाह और रसूल (स0) का हुक्म है कि हम उसके साथ अच्छा बर्ताव करें और उसके लिये तकलीफ़ का बाइस न बनें।

फिर साथियों के साथ भी नेक सुलूक करने का हुक्म है चाहे वह साथी स्कूल और कालेज के हो, चाहे दफ्तर के हों, चाहे सफर के हों। मुख़्तसर यह कि हर मुसलमान को हुक्म दिया गया है कि वह अपने साथियों की इज़्ज़त व एहतेराम करे और उनके साथ अच्छा सुलूक किया करे।

''मा मलकत अइमानुकुम'' यानी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। इस जुमले के अन्दर वह तमाम लोग आ गये जो किसी तरह से भी हमारे ज़ेरे इक़्तेदार हों। जैसे कनीज़, ग़ुलाम, नौकर–चाकर, क़ैदी, रिआया यहाँ तक कि वह जानवर भी जो हमारी क़ैद में हों। इन सब से भी अच्छा बर्ताव करना इस्लाम के नज़दीक ज़रूरी है। फिर आख़िर में फ़रमाया गया है कि अल्लाह उस आदमी को दोस्त रखता है जो दूसरों से झुक कर मिले, अल्लाह की इबादत करे और तमाम लोगों से नेक बर्ताव करे। अगर आज इस्लाम के इस हुक्म पर पूरी शिद्दत और पूरे ख़ुलूस के साथ अमल किया जाये तो हमारी यह दुनिया और हमारा यह समाज ख़ुशहाली और आराम व अमन व सुकून की जन्नत बन जाए। □□□

इदारा

## मुख्य समाचार

## इस्राईल को दुनिया के नक़्शे से ख़त्म कर देना चाहिए: डा0 अहमदी नेजाद

**तेहरान।** ईरान के राष्ट्रपति डाक्टर महमूद अहमदी नेजाद साहब ने कहा कि इस्राईल को दुनिया के नक़्शे से ख़त्म कर देना चाहिए। सरकारी ख़बर रसाँ एजेन्सी अरनान ने यह रिपोर्ट दी है। उनके इस बयान से इस्राईल के लिए ईरान की दुश्मनी में कमी की उम्मीदें ख़त्म हो गयीं हैं। फ़िलस्तीन के क़याम के लिए हिमायत, इस्लामी जमहूरिया का एक अहम सुतून है जो कि सरकारी तौर पर इस्राईल के वजूद के हक़ को तस्लीम नहीं करती। डाक्टर अहमदी नेजाद ने ''सैहूनियत के बग़ैर दुनिया'' के नाम से मुनअक़िद की जाने वाली एक कान्फ्रेन्स में कहा कि इस्राईल को नक़्शे से ख़त्म कर देना चाहिए। इस कान्फ्रेन्स में तक़रीबन तीन हज़ार तलबा ने शिरकत की जिन्होंने इस्राईल मुर्दाबाद के और अमरीका मुर्दाबाद के नारे लगाये। डाक्टर अहमदी नेजाद ने कहा कि आलमे इस्लाम अपने पुराने दुश्मन को अपने दरमियान रहने की इजाज़त नहीं देगा। दूसरी तरफ़ दुनिया के कई मुलकों ने ईरान के राष्ट्रपति के इस बयान की मज़म्मत की है।

## इस्राईल नवाज़ ताक़तों से मोरचा लेना है तो अपनी सफ़ों में इत्तेहाद पैदा करना होगा : मौलाना कल्बे जवाद साहब

**लखनऊ।** क़ाएदे मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहब ने जुमअतुल विदाअ के अपने ख़ुतबे में शबे क़द्र व रमज़ानुल मुबारक के अय्याम की फ़ुयूज़ व बरकात का ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि परवरदिगारे आलम ने रोज़ों को इसलिए फ़र्ज़ किया कि उम्मत मुस्लिमा मुत्तक़ी व परहेज़गार बन जाए। उन्होंने यौमे क़ुद्स के मौक़े पर इस्राईल और मग़रिबी ताक़तों को निशाना बनाते हुए कहा कि किसी भी हालत में अगर इन ताक़तों से मोर्चा लेना है तो मुसलमानों को अपनी सफ़ों में इत्तेहाद पैदा करना होगा। मौलाना कल्बे जवाद साहब ने इस्राईल के ताल्लुक़ से कुछ मुस्लिम मुमालिक और उनके हुक्मरानों के मज़म्मत करते हुए कहा कि उनकी नज़र में तो अमरीका और बिट्रेन ही अस्ल ताक़त हैं, जबकि अल्लाह और रसूल स0 के अहकामात की पासदारी उनको करनी चाहिए।

तारीख़ी आसफी मस्जिद में हज़ारों फ़रज़न्दाने तौहीद को ख़िताब करते हुए मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहब ने कहा कि क़ौम में ज़हनी गिरावट बढ़ती जा रही है और आलम यह है कि मिम्बरे रसूल स0 की तौहीन खुल्लम खुल्ला की जा रही है। मिम्बर को ज़ाती फ़ाएदे के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है और हमारी क़ौम के अफ़राद मिम्बर के नीचे बैठकर उन बदज़बान ज़ाकिरीन और बुरे उलमा के बेकार बयानों की तारीफ करते हैं जो बड़े उलमा और अज़ीम इस्लामी स्कालरों की तौहीन करते हैं। मौलाना कल्बे जवाद साहब ने क़ौम को आगाह किया कि बेहिसी और जुमूद को छोड़कर हक़ की रौशनी में आ जाएये और उन बयानात से बेज़ारी कीजिये जो इस्लाम, तशैय्युअ और उलमा की तौहीन कर रहे हैं। उन्होंने उन अनासिर की तनक़ीद की जो क़ौम में फ़साद और इन्तेशार पैदा करना चाहते हैं। ऐसे अफ़रादों के ज़रिये मक़सदे हुसैन को नुक़सान पहुँचाने में मराजे तक़लीद उलमा को गालियाँ दी जाती हैं, हम को आदाबे मिम्बर नहीं मालूम, यह कहकर कोई छूट नहीं सकता है कि मजलिसे मौला अ0 है। इससे इमाम की तौहीन होती है। आयतुल्लाह ख़ामेना–ई मद्दज़िल्लहू के लिए बेहूदा अलफ़ाज़ इस्तेमाल किये जाते हैं। इमामे ज़माना अ0 का क़ौल है कि यह उलमा हमारी तरफ़ से तुम्हारे लिये हुज्जत हैं जो उनकी तौहीन करते हैं वह हमारी तौहीन करते हैं। मिम्बर की मानवियत को तबाह व बर्बाद किया जा रहा है। ज़ाकिरीन माद्दियत की तरफ तवज्जो दे रहे हैं इस सूरत में जो लोग इन बयानात की तारीफ करें वह भी गुनाहगार होंगे। मौलाना कल्बे जवाद साहब ने मस्जिद में मुनअक़िद अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के तलवा यूनियन के जलसे की भी इजाज़त देकर इत्तेहादे इस्लामी का मुज़ाहेरा किया। मौलाना ने तलबा यूनियन की इस तहरीक की ताईद की जो अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी की अक़लियती किरदार को ख़त्म करने पर एहतेजाज करने से मुताल्लिक़ थी। उन्होंने कहा कि अक़लियती युनिवर्सिटी के लिए हर जद्दोजेहद का साथ देंगे। इस जलसे में यूनियन के सदर अब्दुल हफ़ीज़, फरह ख़ान सिक्रेट्री और ज़ियाउर रहमान बर्क के अलावा दूसरे तलबा ने भी शिरकत की।

# ईरानी ऐटमी प्रोग्राम का मक़सद तबाही नहीं : आयतुल्लाह ख़ामेना-ई मद्दज़िल्लहू

**नई दिल्ली।** जमहूरी इस्लामी ईरान के रहनुमा आयतुल्लाह सैय्यद अली ख़ामेना–ई ने ऐटमी प्रोग्राम के सिलसिले में वाज़ेह किया कि ईरान का ऐटमी प्रोग्राम हुकूमतों को तबाह करने के लिए नहीं है बल्कि यह पुरअमन मिशन ईरान की तरक़्क़ी की राह में एक बढ़ता हुआ क़दम है और इस पुरअमन मिशन को ग़लत रंग दिया जा रहा है। उन्होंने ख़लीजे फ़ारस और शिमाले अफ़रीक़ा के मौजूदा हालात के हवाले से कहा कि अमरीका दुनिया में बज़ाहिर जमहूरियत के नाम पर अपनी हाकमियत क़ायम करना चाहता है। उन्होंने कहा कि अमरीका सिर्फ लेबनान और शाम ही के लिए परेशानी का सबब नहीं बल्कि मिस्र, सऊदी अरब और उरदुन को भी इससे अगाह और होशियार रहना चाहिए।

आयतुल्लाह ख़ामेना–ई ने अमरीकी राए के बारे में वाज़ेह किया कि बाज़ अमरीकी मुबस्सिरीन का माानना है कि इस तरह के इक़दामात से अमरीका अपने मुल्क को खुद ज़वाल की तरफ ले जा रहा है। उन्होंने तागूती ताक़तों के ज़ुल्म की तरफ इशारा करते हुए कहा कि ईरान के वजूद ने इस ख़ास ख़ित्ते में ईरानी नौजवानों और वहाँ की अवाम के ज़रिये दुनिया के मज़लूमों को एक ग़ैर मामूली ताक़त बख़्शी है।

# ईद मिलन और जलस-ए-इत्तिहाद

**लखनऊ।** मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के मिम्बर क़ाएदे मिल्लत मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नक़वी साहब के ज़ेरे एहतेमाम ईद मिलन और जलस–ए–इत्तेहाद की तक़रीब का प्रोग्राम इमाम बाड़ा गुफ़रान माआब में मुनअक़िद हुआ जिसमें हज़ारों लोगों ने शिरकत की।

इस ईद मिलन और जलस–ए–इत्तेहाद के प्रोग्राम की इफ्तेताही तक़रीर करते हुए मौलाना सफदर जौनपूरी साहब ने कहा कि अगर एकता और इत्तेहाद के लिए वोटिंग की जाए तो पूरी दुनिया एकता के हक़ में वोट देगी। इनके बाद गुरमीत सिंह साहब ने अपनी तक़रीर की इब्तेदा बिसमिल्लाहिर रहमानिर रहीम से करते हुए हज़रत अली अ0 के हवाले से कहा कि इन्सान वह है जो ग़रीबों से हमदर्दी रखे, किसी का हक़ न मारे और मज़दूर की मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दे। उन्होंने कहा कि अगर अल्लाह की ख़िदमत करना चाहते हो तो उसकी मख़लूक़ की ख़िदमत करो। गुरमीत सिंह के बाद अहलेसुन्नत के मारूफ़ आलिमे दीन मौलाना जहाँगीर आलम क़ासमी साहब ने कहा कि इन्सान वह है जो गुनाहों से डरता हो और अल्लाह का एहतेराम करता हो, अल्लाह इन्सान के हर अमल का जानने वाला है, अल्लाह उन पर रहम करता है जो अल्लाह के बन्दों पर रहम करते हैं। उन्होंने कहा कि दहशतगर्दों को मुसलमान कहना ग़लत है क्योंकि इस्लाम का मतलब है सलामती। इनके बाद हरयाणा ने आए हुए महमाने खुसूसी स्वामी अग्निवेश ने हाज़रीन को ख़िताब करते हुए कहा कि धर्म का मक़सद एक है और मज़हब वह होता है जो इन्सान को इन्सान से जोड़े। स्वामी अग्निवेश ने कहा कि हिन्दुओं को आज जिस चीज़ की सबसे ज़ियादा ज़रूरत है वह उसे नहीं दी जा रही और उन्हें बुत परस्त बना दिया गया है। उन्होंने कहा कि दीपावली के दिन हिन्दुओं से लक्ष्मी की पूजा करायी जाती है और इसी तरह हिन्दू सरस्वती की पूजा करते हैं लेकिन अफ़सोस यह है कि लक्ष्मी और सरस्वती की पूजा करने वाले सबसे ग़रीब और बे पढ़े–लिखे होते हैं। उन्होंने कहा कि मादरे रहम में बच्चे का क़त्ल सबसे बड़ा गुनाह है और इस सिलसिले में मौलाना कल्बे जवाद साहब के साथ एक मुहिम चलायी जायेगी। इस महफिले इत्तेहाद में बुज़ुर्ग आलिमे दीन मौलाना हसन अब्बास फ़ितरत साहब ने भी अपनी तक़रीर से लोगों को फ़ाएदा पहुँचाया।

प्रोग्राम के बीच में डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट आर0एन0 त्रिपाठी और पुलिस कप्तान आशुतोष पाण्डेय के गुलपोशी की गयी। इस मौक़े पर मौलाना अलमदार, मौलाना गुलज़ार, मौलाना सैफ अब्बास, मौलाना तस्नीम मेहदी साहेबान और दूसरे उलमा व दानिश्वरान हज़रात से शिरकत की। निज़ामत मौलाना अज़ीम हुसैन ने की। आख़िर में मौलाना कल्बे जवाद साहब ने हाज़रीन का शुक्रिया अदा किया।